

अमृत काथा रहे सुरक्षाली

पूर्ण पुरुष किस नज़र से दुनिया को देखते हैं?

(सत्संदेश जुलाई 1968 में प्रकाशित प्रवचन)

महापुरुष दुनिया में आते हैं, दुनिया को असल रूप में देखते हैं। जिस नज़र से वह देखते हैं वह नज़र हमारी नहीं बनी। उसका कारण? कि वह तो आत्मा की नज़र से देखते हैं दुनिया को कि हम आत्मा देहधारी हैं और दुनिया देह के level (दृष्टि) से देखती है। फर्क यह है। जिस्म-जिस्मानियत और ताल्लुकात (शरीर और उसके व्यापार तथा सम्बन्ध) को सत मान रखा है, दुनिया वालों ने। यह जगत असत्य है, यह वेद शास्त्र कहते हैं। सत्य के मायने है, हमेशा रहने वाला, न बदलने वाला, एक सर रहने वाला। उन की (दुनिया वालों की) तो यह कैफियत (हालत) है। क्या कहते हैं वह?

अगर फिरदौस बर रहे ज़मीनस्त।

हमीनस्तो, हमीनस्तो, हमीनस्तो॥

(कि अगर कोई स्वर्ग है तो वह यही है, यही है, यही है।) बस। “एह जग मिछ्ठा आगे किन डिछ्ठा।” (यह दुनिया मीठी है, आगे किस ने देखा है क्या है)। इस के आगे कुछ नहीं है। और दूसरे, जो आत्मा के level से देखते हैं, वह कहते हैं, अरे दुनिया क्या कर रही है। वह Common-sense (साधारण समझ) - कोई फिलासफी नहीं, साधारण व्यवहारिक बुद्धि की बात पेश कर रहे हैं, महापुरुष। कोई inference (बुद्धि विचार पर आधारित निर्णय) नहीं

निकाला, कोई फिलासफी नहीं। They are good observers. वह देखते हैं, दुनिया किस रंग में जा रही है। वह बेचारे पुकार-पुकार कर कहते हैं, मगर नक्कारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है। यह हालत है दुनिया की।

इन्सान के दो पहलू हैं। यह जिस्म रखता है- जिस्म नहीं। जिस्म इस को मिला है भागों से, बड़े ऊंचे purpose (उद्देश्य) के लिये। वह purpose क्या है? कि ज़िन्दगी के राज़ (भेद) को हल करे। इस सारी कायनात (सृष्टि) को बनाने वाला कोई है, तो उस को जाने और उस को जानने से पहले आप को जाने। बस। जिन्होंने राज़े-ज़िन्दगी (जीवन की पहली) को हल किया है उन की सोहबत में यह इस मुईम्मे को हल कर सकता है। तो मैं अर्ज़ कर रहा था दो पहलू हैं ज़िन्दगी के। एक बाहरी, एक अन्तरी। जो बाहरी जीवन बसर कर रहे हैं उन को यह दुनिया सती भास रही है। “एह जग मिड्डा अगे किन डिड्डा।” मगर इस में हम देखते हैं, इस में रोज़ नशेबो-फराज़ (उतार-चढ़ाव) आते हैं। कोई इन्सान सुखी नहीं नज़र आ रहा। देह धर सुखियां कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो।

कबीर साहब कहते हैं कि हमने देह धारण कर के किसी को सुखी नहीं देखा। जो देह का रूप बन कर, देह के level से दुनिया में विचरते हैं, वह कभी सुखी नहीं हो सकते। और महापुरुषों ने भी यही कहा। “नानक दुखिया सब संसार।” दुनिया में कौन सुखी हो सकता है? जिस ने राज़े-ज़िन्दगी (जीवन की पहली) को हल किया है उस की सोहबत संगत कर के जिस को understanding (सही-नज़री) मिली है, वह तो सुखी, बाकी सब दुखी। क्या क्या दुख हैं दुनिया को? कोई तन कर के दुखी है, कोई धन कर के दुखी है, कोई मन के थपेड़ों से दुखी है। “एक न एक दुख सबन को।” फिर सुखी कैसे हो सकते हैं? “सुखी सन्त का दास।” सन्त किस को कहते हैं? जिस ने ज़िन्दगी के राज़ को हल कर लिया है

और आत्मा के level से दुनिया को देखता है वह सुखी है, बाकी सब दुखी।

हमने जिस्म के मुतलिक बहुत कुछ जाना। हम हैं चेतन स्वरूप आत्मा, प्रभु की अंश, micro God प्रभु के बच्चे, मन इन्द्रियों के घाट पर घिरे पड़े हैं, जिस्म और जगत का रूप बन रहे हैं। यह सब कुछ हमारे ही आधार पर चल रहा है और हम सब इसी के निर्भर हो रहे हैं, यह कह दो। नतीजा क्या है? हम आत्मा रखते हैं- हम आत्मा हैं, रखते नहीं। हम मन रखते हैं, बुद्धि रखते हैं, इन्द्रियां रखते हैं। तो हम से मन ने ताकत लेनी है और इन्द्रियों ने भी हम से ताकत लेनी है। अगर यह सही नज़री बनी रहे बाकायदगी बनी रहे, तब तो ठीक, नहीं तो हमारी हालत क्या है? हमारे दुखी होने का कारण क्या है, कि इन्द्रियां भोगों के बस में हैं, मन इन्द्रियों के बस में है और बुद्धि मन के बस में है। उल्टा किस्सा बन रहा है। इस लिये जो जागते पुरुष हैं, वह अरदास (प्रार्थना) क्या करते हैं?

गुरुमुख का मेल, साथ का संग, नाम का रंग,
सेई प्यारेया मेल जिन्हां मिलेयां तेरा नाम चित्त आवे।

हमारी बुद्धि का राखा (रक्षक) वह परमात्मा है, या जिन में वह परमात्मा प्रगट है (अर्थात् गुरुमुख)। Right guidance (सही पथप्रदर्शन) मिलेगी। Right guidance से बुद्धि direct होगी, चलेगी, उस तरफ, जिस तरफ वह ताकत चलाए। और मन वह करे जो बुद्धि प्रेरणा दे। इन्द्रियां वह काम करें जो इन्द्रियों के भोगों से सम्बन्ध न रखते हों बल्कि जिस इन्द्री से चाहे काम ले, न ले। अब उलटी मशीनरी चल रही है ना। यही कारण है दुख का। हम हैं चेतन स्वरूप आत्मा, फिर मैं अर्ज़ करूं। ‘कहु कबीर इह राम की अंश’ और, ‘तू थी सत्तनाम की गोती।’ एक आत्मा तू सत्तनाम की गोत वाली (सजातीय) थी, महाचेतन प्रभु की अंश थी, मन चूँहे के साथ लग कर इन्द्रियों के भोगों-रसों में लम्पट होने के कारण जिस्म और जगत का रूप बन रही है, इतना कि अपने आप को भूल

चुकी है, अपने जीवनाधार (परमात्मा) को भूल चुकी है। यह कारण है दुख के होने का।

अनुभवी पुरुष जब मिलता है- उस ने क्या किया है? बुद्धि उस के इशारे पर चलती है माफ करना, बुद्धि का कोई प्रेरने वाला है ना। अब बुद्धि के आधार पर मन काम करता है, जो suggestion (प्रेरणा) right guidance (सही पथप्रदर्शन) मिलती है। दो चार बार तो मिलती रहती है, जब तुम परवाह नहीं करते, फिर वह चुप हो जाती है। अन्तर से आवाज़ conscience (अन्तःकरण) की आवाज़ जिसे कहते हैं, वह आती है, वह right guidance देती है - काम करो बुरा, कहती है तुम ने बुरा काम किया। कह देती है। अगर आवाज को सुन लो तो ठीक, न सुनो तो अच्छा। जब imperial wall आप उलंघन कर जाते हो फिर वह खामोश हो जाती है। बुरे से बुरे आदमी को भी conscience कहती है, भई यह ठीक नहीं। अगर यह suggestion (अन्तःकरण की आवाज़) guided हो (प्रेरित हो) किसी higher power (ऊँची ताकत) से और उस के आसरे मन काम करे, ऐसा मन, इन्द्रियों से जैसा मज़्ज़ी हो काम ले, उस को भोग न खैंचे, तो सुखी हो जायेगा कि नहीं?

यह है दुख का मूल कारण। सन्त का दास क्यों सुखी है? उस ने एक चीज़ को set (सुनियन्त्रित) किया है। घोड़े को खैंचना चाहिये ना, तांगे को, सामान को- उलटा घोड़ा तांगे के पीछे लग रहा है। यह बात बन रही है। समझे। तो right understanding (सही नज़री) का सवाल है। दुनिया बाहरी रंगों पर मस्त हो रही है। महापुरुष आते हैं। किस को address (सम्बोधन) करते हैं? लोगों को नहीं, अपने आप को करते हैं। किन को? अपने साथियों को? अपने आप को भी नहीं, अपने साथियों को। यह पहला संगी-साथी है कि नहीं, हमारे साथ दुनिया में आता है। क्यों साहब? फिर इस के आने के सबब से, इस में इन्द्रियां लगी

पड़ी हैं, फिर वह इन्द्रियों को address (सम्बोधन) करते हैं। तो देह का क्या कहते हैं?

ऐ सरीरा मेरया तुथि कर्म कमाया, जा तू जग में आया॥

ऐ शरीर, बता तूने क्या काम किया है? भागों से मिला है ना। किस लिये मिला था। It is thy turn to meet God. (यह जन्म मिला है कि तू प्रभु को मिले)। किस ने पाना है प्रभु को? “न यह इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से।” समझे? उस का अनुभव करना है आत्मा ने। हम आत्मा चेतनस्वरूप हैं। देह ने काम क्या करना है? जो अन्तर से suggestion (प्रेरणा) आए। उस पर मन चले, मन के कहे पर इन्द्रियां चलें। तब काम होता है ना। दो मिसालें पेश करते हैं महापुरुष। कहते हैं, एक था बन्दर, एक था बकरा। घरवाली दूध दोह कर रख जाती थी। बन्दर के गल में होती थी रस्सी पड़ी हुई। बन्दर ने क्या करना, जा कर दूध पी लेना और थोड़ा दूध जा कर बकरे के मुंह पर लगा देना। जब घरवाली ने आना, देखना ओहो, बकरा दूध पी गया। दे मार और दे मार और दे मार। अब बकरे बेचारे का क्या कसूर? एक आदमी ने कहा, भई बाहर तो यह (बन्दर) बड़ा भलामानस बैठा है। मन जैसे right guidance (सही प्रेरणा) न मिलने से उलटे रस्ते, इन्द्रियों के भोगों-रसों में, बुद्धि वैसी उस की गुलाम हो रही है, वैसा वह काम करते हैं। इन्द्रियों के भोगों-रसों का। मगर लोग क्या समझते हैं? इस बकरे ने, शरीर ने, ख्वाहिश की। शरीर का क्या कसूर है? मानुष देह तो भागों से मिली थी कि इस में तुम प्रभु को पा सकते हो। 84 लाख जियाजून की यह सरदार जूनी है, बड़े भागों से मिलती है। देवी-देवता इस को पाने को तरस रहे हैं जो हम को मिल चुकी है। मगर इस बेचारे ने क्या किया- यह तो बकरा है। दुखी हो रहा है। मेहरबानी किस की है? मन की। कैसे मन की? जो बुद्धि को अपने आसरे ले जर चलाता है। तो analyse (विवेचन) हुआ, दुख क्यों है? तो

जैसे बकरे बेचारे का कोई कसूर नहीं, बन्दर का कसूर है। अरे भई सारा मन का कसूर है जिस को guidance नहीं मिली। बस। और बात कुछ नहीं।

तो महापुरुष आते हैं, वह कहते हैं, “ऐ सरीरा मेरेया जां तू जग में आया क्या तुध कर्म कमाया। तुध क्या कर्म कमाया जां तू जग में आया।” जिस ने तेरी रचना की थी उस का कभी तूने ख्याल नहीं किया। बताओ यह जिस्म कैसे बना, माता के पेट में कौन सी मशीनरी इसे बनाती है? कोई है मशीनरी आप के पास? कुत्ते का बच्चा कुत्ते की शक्ल बनाता है, माफ करना, आदमी का बच्चा आदमी की शक्ल। कौन आंख मुँह कान बनाता है। कोई मशीनरी है सामने? जिस ने तेरी रचना की है ऐ शरीर। तूने उस को नहीं जाना। वह (महापुरुष) लोगों को उपदेश नहीं देते, अपने आप को देते हैं, कि ऐ शरीर देख, तू दुनिया में आया था किस लिये? तूने प्रभु को पाना था। यह golden opportunity (सुनहरी मौका) है, It is thy turn to meet God. (प्रभु को पाने का यही मौका है)। तूने क्या किया? बता। जिस ने तेरी रचना की है, उस को तूने जानना था। मानुष देह में ही उस को जान सकते थे। वह काम नहीं किया। फिर इन्द्रियों को address (सम्बोधन) करते हैं-

ऐ नेत्रओ मेरेयो, हर तुम में जोत धरी,
हर बिन अवर न देखो कोई॥

प्रभु ने तुम को देखने की शक्ति दी है, अन्तर में देने वाले को देखो हरेक काम में। हम उस को भूल जाते हैं। क्या रह जाता है। फिर कानों को address (सम्बोधन) करते हैं-

ऐ श्रवणो मेरेयो, हर शरीर लाए सुनो सतवाणी॥

उस वाणी को सुनो, जो वाणी हो रही है, Music of the spheres

(मण्डलों का राग) हो रहा है। “बाणी वज्जी चौहजुगी सच्चो सच सुनाय।” चारों युगों में बजती चली आई है। यह बाणी कैसे मिलती है? गुरु द्वारा मिलती है:-

गुर की बाणी सब माहिं समाणी

आप कथी ते आप बखाणी ॥

‘आप कथी’ प्रभु से निकलती है। “आप बखाणी” जिसको आप दया करे (प्रभु), उस को manifest (प्रगट) करता है।

जिन जिन जपी तेही निस्तरे, पाया नेहचल थाना हे ॥

जो उस वाणी के साथ लगे वह नेहचल, अटल-अविनाशी स्तान को पा गये। तो जो जागता पुरुष है वह दूसरों को नहीं, अपने को उपदेश देता है। ऐ शरीर तूने दुनिया में आकर क्या किया है, ऐ आंखों तुम ने क्या किया है, ऐ कानों, क्या तुम ने किया है?

ऐ रसना तू अनरस राच रही तेरी प्यास न जाय ॥

ऐ रसना। तूने महारस को पाना था। तू बाहरी रसों-कसों में रह गई। यह right understanding (सही-नज़री) किन से मिलती है? सन्तों से। सन्त किस को कहते हैं? जिस ने right understanding (सही-नज़री) को पाया है। वह आत्मा के level से दुनिया को देखता है। यह है फर्क। तस्वीर के दो पहलू हैं। सामने तो बड़े खूबसूरत नकशो-निगार नज़र आते हैं। और पीछे क्या है। जो किनारे खड़े होके देखते हैं दुनिया क्या कर रही है, यह उन का नज़रिया (दृष्टिकोण) है। जो बाहरमुखी है सिर्फ़, बाहरी level से देखते हैं, बाहरी संस्कार हृदय के reservoir (स्रोत) में भर रहे हैं, इतने कि overflow कर रहे हैं (भर कर बाहर छलक रहे हैं) एक किसम का superficial (थोथा, निरर्थक) जीवन बसर कर रहे हैं वह। सुपने भी इसी के आते हैं, स्रोत में बरड़ा कर भी दुनिया

निकलती है। कभी tap inside नहीं किया (अन्तर को नहीं खोजा) कि हम कौन हैं? शरीर की शोभा हम से है। दुनिया की शोभा हमारे शरीर से है। तुम हो तो सब सलाम-बन्दगी करते हैं ना। जब तुम देह को छोड़ो, कौन पूछेगा भई?

तिच्चर बसे सहेलड़ी जिच्चर साथी नाल ॥

जां साथी उठि चल्लेया तां धन खाकुराल ॥

बड़ी साफ बात। दुनिया की शोभा- आप मुह जग धरलो- खाना-पीना सब ठीक, जब तक हम जिस्म में हैं, होश-हवास बरकरार हैं। तो यह है दो पहलू जिन्दगी के। महापुरुष आकर तरह-तरह से इस को समझाने का यत्न कर रहे हैं। किसी समाज में रहो, हम मानुष हैं ना। भागों से मिली है यह मानुष देह। यह प्रभु के पाने का वर्क है भई। इस गर्ज से हम समाजों में दाखिल हुए, मुद्रणे हो गई। जब तक right guidance न मिले, किसी समाज में रहो, वह मन-इन्द्रियों के घाट पर रहेगा। कहाँ जाएगा? ‘जहाँ आसा तहाँ वासा।’ तो इस मज़मून पर महापुरुषों ने तरह तरह से यत्न किया है, समझाने का। मैंने यह किताब अभी खोली थी, महापुरुषों का कायदा है उपदेश देना हरेक level से। Direct (प्रेरणा) आखिर क्या करते हैं, अरे भई तुम आत्मा हो, प्रभु की अंश हो, तुम्हें मानुष देह मिली है। तुम ने प्रभु को पाना है। अरे भाइयों, तुम क्या कर रहे हो? तुम ने जिस्म के मुतल्लिक बहुत कुछ जाना- कैसे बनता-बिगड़ता है, बुद्धि के मुतल्लिक बहुत कुछ जाना, बड़ी-बड़ी नई ईजादे कर डालीं। तुम्हारे सामने हैं, टेलीविज़न है, रेडियो है, देखते हो कौन बोलता है? क्या बोलता है? दुनिया का सफर घंटों में तय कर लेते हो। मगर क्या हम सुखी है?

इल्लते जुमला इल्लम्हा ईनस्तो ई ।

ता तो दानी मन क्यम दर यौमे दीं ।

सारे इल्मों की इल्लतगाई (बुनियाद) क्या है कि हम जानें कि हम कौन हैं। फिर क्या कहते हैं? कीमते हर कालह मीदानी के चीस्त। कीमते खुद रा न दानी इब्लहीस्त।

हरेक इल्म के मुतल्लिक तूने ऐ इन्सान- जिस्म के मुतल्लिक, बुद्धि के मुतल्लिक, इन्द्रियों के घाट के मुतल्लिक बहुत कुछ जान लिया है। अगर अपने आप के मुतल्लिक नहीं जाना तो कहते हैं तू बेवकूफ है, बेवकूफ। बेवकूफ का मतलब है कि right understanding (सही-नज़री) नहीं, और क्या। बड़े प्यार से समझाते हैं। तो भाइयों, किसी समाज में रहो, यह अमर जीवन मिलता कब है? जब किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठो। न आलिमों से मिलेगा, न फ़ाज़िलों से, न ग्रन्थाकारों से, न चातुरों से, न प्रापेंडा करने वालों से। अनुभवी पुरुष अगर इल्म से आरास्ता है (अर्थात् वह विद्वान भी है) तो कई तरीकों से बयान करेगा उसी चीज़ को, सैकड़ों मिसालों देकर। अगर इल्मियत की डिग्री नहीं भी पाई हो तो भी right (सत को) commonsense (व्यवहारिक बुद्धि) से पेश करेगा, उन्हीं मिसालों से, जो उस के गिर्दागिर्द (आस-पास) की हैं, उन से पेश कर देगा। बात तो वही है।

बुल्लेहशाह साहब, शाह इनायत के पास गए। पूछने लगे, परमात्मा कैसे मिलता है? कहने लगे भई, “साईदा की पावणा, इधरो पट्टणा ते उधर लावणा।” Direction of the attention (सुरति या तवज्ज्ञो को एक तरफ़ लगाना ही तो है) जिस-जिस्मानियत से, मन इन्द्रियों के घाट से हटो, तुम्हें अपने आप की होश आए। जीवनाधार (परमात्मा) की होश आए। तो परमार्थ को पाना कोई मुश्किल नहीं माफ करना, दुनिया के इल्म हासिल करना मुश्किल है। क्योंकि उस में hypothesis (कोई कल्पित आधार) बनाना पड़ता है। इस में self-analysis

कर लो (चेतनाआत्मा को जड़, शरीर से अलेहदा कर लो) बस। very easy, बहुत आसान है यह। क्योंकि हम superficial (थोथा) जीवन बसर कर रहे हैं, अपने आप को भूल चुके हैं, सारा मामला दरहम-बरहम (उलट-पुलट) हो रहा है। तो बात समझे? तुम कौन? चेतन स्वरूप आत्मा। मानुष देह भागों से मिली है। इस में तुम ने इस के रचना करने वाले को जानना था, यह पिण्ड है, यह अण्ड है, यह पारब्रह्मण्ड है- सारी कायनात (सृष्टि) के राज (भेद) का अनुभव करना था, मानुष देह पा कर, मगर हम कर क्या रहे हैं? उलटा चरखा चल रहा है। इस वक्त गुरु नानक साहब पहली पातशाही का शब्द आ रहा है। गौर से सुनिये। महापुरुष आते हैं, तरह तरह से हमारा रोना रो रो कर, गला फाड़-फाड़ कर चले जाते हैं। जो सुन ले, सुन ले, नहीं तो नक्कारखाने में तूती की आवाज़ क्या है? जो सुन लेते हैं- आपको पता है, भगवान् कृष्ण गीता में अर्जुन को सारा उपदेश देकर आखिर क्या कहते हैं? “ए अर्जुन! तूने सुना?” यह लफज़ हैं। फिर कहा, “तूने सुना?” सुना तो सारे जहान ने, मगर अन्तर at home भी बात हुई कि नहीं? (दिल में घर भी किया कि नहीं)। अगर हुई है तो कितनी भ्रांति दूर हुई है? अब इतनी बात सुनी आप ने- वाकई (सचमुच) सुन ली? At home हुई? What is your further step (अब अगला कदम क्या उठा रहे हो)। कितनी भ्रांति दूर हुई? यह लफज़ हैं (भगवान् कृष्ण के)। महापुरुष जागते होते हैं, हमें जगाने आते हैं, होश में लाने आते हैं। शब्द सुनिये गौर से, क्या कहते हैं:-

अमृत काया रहे सुखाली बाजी ए संसार।

गुरु नानक साहब पहली पातशाही की बाणी है। फरमाते हैं, यह संसार सारा, जैसे बाजीगर का खेल होता है ना, क्या होता है? वह बन-बना के यह वह करता होता है- पीछे कुछ भी नहीं। कहते हैं। यह संसार ही बाजीगर का खेल है, एक delusion (धोखा) है, grand delusion (बड़ा भारी धोखा)।

वह delusion (धोखा) कहां से आया? माया नाम delusion का है, धोखे का। यह कहां से (धोखा) शुरू हुआ? “एह सरीर मूल है माया।” हम देहधारी हैं, देह नहीं। देह के level से (नज़र से) दुनिया को देख रहे हैं, इस लिये धोखे में हैं। देह को चलाते हैं ना, मन-इन्द्रियों के ज़रिये। अगर चलाने वाला (आत्मा) इस से recede कर जाए (इससे, जड़ शरीर से, अतीत हो जाए) तो होश आ जाए। कहते हैं, यह सारा संसार ही एक खेल है, बाजीगर का खेल। बाजीगर आ कर शोर मचाता है, यह-वह कर करा के पैसे बटौर के ले जाता है। होता बीच में कुछ भी नहीं। इसी तरह यह संसार एक बाजीगर का खेल है।

बाजीगर ज्यूं बाजी पाई, सब खल्क तमाशे आई।

यह कबीर साहब कहते हैं। दुनिया तमाशा देखती है। उस का right understanding न होने से, वह बहे चले जाते हैं। कोई रोता है, कोई चिल्लाता है, कोई हाय-हाय करता है, कोई गुलछरे उड़ाता है, कोई नाचता-टापता है। बस। यह हालत है। अजीब नज़र बन रही है। आदमी पैदा होता है। वह कैद हो गया माफ करना। जिस घर में पैदा है वह सुंशियां करता है, हा हा हा है, बच्चा हुआ। अरे भई वह बेचारा कैद हो गया। ‘देहधर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुरिखिया हो।’ देह के झँझट के ऊपर आएगा तो अपनी उसे होश आएगी ना। अभी तो कैद हो गया। यह समय केवल मानुष जन्म ही का है, जिस में होश आ सकती है। तो पहली बात- यह प्रभु का खेल है। कई लोग कहते हैं, यह क्यों किया? यह उस से (प्रभु से) पूछना चाहिये। यही आता है ना, जब उस ने चाहा मैं एक से अनेक हो जाऊँ- क्यों साहब, इस से ज्यादा तो कुछ नहीं मिलता ना- तब यह दुनिया into being (होने में) आई। किसी महापुरुष की बाणी ले लो।

एको क्वाओ तिस ते होए लक्ख दरियाओ।

क्यों बनाई यह दुनिया, बाजीगर का खेल क्यों रचाया? It is His Will

and Pleasure, go and ask Him. (उस की मर्जी उस से पूछो) यह सवाल कब है? जब हम मन-इन्द्रियों के घाट पर हैं। उस के पास कब पहुँचेंगे? जब मन-इन्द्रियों के घाट के ऊपर आयेंगे- यह सवाल ही नहीं रहेगा। देखिये बड़ी मोटी बात, बीज पहले कि दरखत? मुर्गी पहले कि अण्डा? कोई है बुद्धि के दायरे में कोई इस के हल होने का उपाय? कोई हल है? जब तक जिस्म-जिस्मानियत से हम ऊपर नहीं आते इस राज़ (भेद) को जान नहीं सकते। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, यह दुनिया बाजीगर का खेल है। हम देह को अमर समझ रहे हैं। अमर नहीं है। एक फ़कीर के पास एक शख्स आया कि फलाना आदमी दम तोड़ रहा है। कहने लगा कितनी उम्र है? कहने लगे 72 साल की। कहने लगा उस को तो 72 साल हो गये दम तोड़ते हुए, उस का आखिरी दम बाकी है। माता समझती है, बच्चा बड़ा हो रहा है। और बच्चा? क्यों साहब? बड़ा हो रहा है कि छोटा? अगर 50 साल जीना है, 10 बरस का हो गया तो चालीस साल का रह गया ना। बीस का हो गया तो तीस का रह गया, चालीस का हो गया तो 10 साल का रह गया। “चलती को गाड़ी कहें, कढ़े दूध को खोया”- यह देख कर कहते हैं, “देख कबीरा रोया।” उस का कारण क्या है? “एह सरीर मूल है माया।” हम जिस्म के level से दुनिया को देख रहे हैं। जब तक self analysis (जड़ से चेतन को अलेहदा कर के) से हम अपने आप को नहीं जानते यह धोखा नहीं मिटता।

कैसे इस से आज़ाद हों? हम खुद हो सकते हैं क्या? क्यों नहीं हो सकते? उस का कारण? वही जो पहले पेश किया, भोग इन्द्रियों को खैंच रहे हैं, इन्द्रियां मन को खैंच रही हैं, मन बुद्धि को खैंच रहा है। इस को right guidance चाहिये। तो कहते हैं, दुनिया एक बाजीगर का खेल है। यह ऐसा समय मिला है, मानुष देह का, जिस में तुम इस राज़े-ज़िंदगी (जीवन की पहेली) को हल कर सकते हो। किन की सोहबत में? जिन्होंने हल किया है। वह self-analysis

(पिण्ड से ऊपर आने) का थोड़ा अनुभव देंगे, demonstration (साक्षात्कार) कर के। उस को रोज़-रोज़ बढ़ाओ। हज़ार तुम बाहर के साधन करते रहो सारी उम्र, क्या अन्तर में प्रकाश हो जायेगा? मन-इन्द्रियों के घाट पर रहोगे। नेक कर्म हैं, नेक फल मिलेगा। तो कहते हैं, यह दुनिया बाजीगर का खेल है। हम समझते हैं यह हमेशा रहने वाली है। Level (देखने का स्तर) बदल गया ना। हालांकि यह बात सही नहीं। रोज देखते हैं, अपनी आंखों से। इस धोखे से कौन निकले?

कहो नानक बिन आपा चीन्हे मिटे न भ्रम की काई॥

जब तक हम analysis कर के (पिण्ड से ऊपर आ कर) अपने आप का अनुभव नहीं करते, यह भ्रम दूर नहीं होता। और हम जब चाहें देखें, जब चाहें न देखें, जब चाहें सुनें, जब चाहें न सुनें। कारखाना हो ना जिस department का पटा off (बन्द) कर दो वह बन्द हो जाता है, जिस इन्द्री से चाहो काम लो, चाहो काम न लो। हमारी हालत इस वक्त क्या है? हम नहीं बल्कि यह चीज़ें हम को खैंच रही हैं बेअखत्यार। उस का कारण है कि हम समझते हैं देह सुखी रहे। देह सुखी रहने के कारण क्या करता है? देह को स्थिर मान रहा है- यह है नहीं। जगत असत है, आत्मा सत है, यह वेद भगवान कहता है। और यह भी वेद कहता है कि हे प्रभु, मुझे असत से सत की तरफ ले चल। सत, जो न बदल रहा हो। जगत बदल रहा है- matter का, तत्वों का बना हुआ है, यह देह भी matter की बनी हुई है। इसी से भूल शुरू होती है। बस। बाकी जो मिलना-जुलना है, कोई स्त्री बन गई, कोई पति बन गया, कोई भाई, कोई बन्धु, कोई लड़का, कोई लड़की, 'कर्मी बहे कलम', जैसे बीज वैसा फल, यह कर्मों के अनुसार यह कलम चली है, कोई कुछ बन गया, कोई कुछ बन गया। क्योंकि प्रभु के कलम से बनी है, इसको प्यार से निभाओ। लेना-देना खुशी से दो। कुछ इस गुंज़ल (जंजाल) से निकलो भई।

तो पहली बात कहां से शुरू करते हैं? 'बाज़ी एह संसार।' यह संसार एक बाज़ी है। क्यों बनाया, क्यों नहीं बनाया, यह उस से पूछना चाहिये भई। वहां जाओगे तो पूछोगे। उस की Will (मर्जी) है ना भई- और तो कोई reason (कारण) नहीं दिया कहीं, कि दिया है? किसी महापुरुष ने नहीं दिया (और कोई कारण)। यही कहा, "बाजीगर ज्यूं बाजी पाई सब खल्क तमाशे आई।" यह उस की मर्जी है। जिस की मर्जी से बना है, उस को जानो। उस ने खेल लेने-देने का है न बनाया। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। पहली बात समझ आई भई? क्या चन्द-रोज़ा (चार दिन का) सिलसिला यह खेल का खेल है। बस। जब वह सत्ता हटेगी, सब खत्म हो जायेगा। शरीर भी खत्म हो जायेगा। यह जिस्म की शोभा हम से है, जब तक हम इस के साथ हैं। हम इस में कैद हैं। आँखें खुली हैं, कान खुले हैं, मुँह खुला है। हम इस से भाग नहीं सकते। सांस बाहर जाता है, बाहर रह नहीं सकता, कोई चीज़ धकेल कर वापस ला रही है। वह सत्ता हटेगी तो खेल खत्म। लाखों वाले लाखों छोड़ गए, करोड़ों वाले करोड़ों छोड़ गये, महलों वाले महल छोड़ गये। हां जिस से लिया है, गला काटा है, खून निचोड़ा है, action reaction होगा (कर्म विधान के अनुसार जैसा किया वैसा कल भोगना पड़ेगा)। पिछले कर्मों के अनुसार यह देह मिली है। कुछ नये कर्म, रोज़ नये बीज बीज रहे हैं। यह जिसम मिला था इस लिये कि हम अपने आप को जानें, उस को देखने वाले बन जाए, बाजीगर को देखें कि वह बाजी चला रहा है। फिर तो कुछ और रंग हो जाता ना। मगर वह नहीं किया। नतीजा? पिछले संचित कर्म भी हमारे सिर पर बोझ हैं। और नए लदे जा रहे हैं।

तो महापुरुष कहते हैं, यह मानुष देह मिली है, बता कितनी यह (कर्मों की गठड़ी) हल्की हुई है? यह बोझ कैसे हल्का होगा? Conscious Co-worker होने से (जब यह देखने वाला बने कि वह प्रभु कर रहा है, मैं नहीं) यह बोझ हल्का होगा और किसी तरह से नहीं। तो यह सारा दुख क्यों है कि

हम शरीर को सुखी रखना चाहते हैं। हमेशा यह रहती नहीं। खा-खाकर, नतीजा? खाना हम को खा जाता है। इन्द्रियों के भोगों-रसों को भोग भोग कर, भोग हमें भोग लेते हैं। हम भोगने के काबिल नहीं रहते। देख लो। जो बहुत खाता है, मेदा हज़म ही नहीं करता। पुरातन ऋषि कहते हैं कि भगवान् विष्णु से अन्न देवता ने शिकायत की कि लोग बड़ी बेदर्दी से मुझ को खाते हैं। कहने लगे, जो तुम को खाए, तुम उस को खा जाना। जो भोग हम भोगते हैं ना, खुशी से, कुछ मुद्दत के बाद हम भोगने के काबिल ही नहीं रहते।

बात क्या थी, बन क्या गई। देह है, बदलने वाली, मगर हम इस को स्थिर समझते हैं। “अमर जान संची एह काया।” अमर जान कर इस में लगे पड़े हैं। नतीजा क्या है? यह अमर है नहीं। जब ज़रा Link (जोड़ने वाला सिलसिला) off होगा, बस खत्म।

अमृत काया रहे सुखाली बाजी ए संसार॥

लभ लोभ सब कूड़ कमावैं बहुत उठावैं भार॥

कहते हैं, सब की मूल चीज़ क्या है? लालच, desire (इच्छा), अगर एक desire (इच्छा) न हो, कहते हैं, “लभ लोभ सब कूड़ कमावैं बहुत उठावैं भार।” लभ लालच की खातिर ही यह सारे दुख हैं। खाहिश (इच्छा) हुई, खाहिश सब चीज़ की बुनियाद है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अंहकार-पांच बयान किये जाते हैं, मगर वह एक ही चीज़ की मुख्तलिफ़ सूर्तें हैं। एक नाला हो पानी का, पानी जा रहा हो। उस के आगे एक पत्थर रख दो। जब टकराएगा पानी उस से, उस में दो चीजें बनेंगी- शोर बनेगा, आवाज़ और ज्ञाग बनेगी, पानी के टकराने से। जब हमारे किसी लब-लालच की खातिर, कोई खाहिश की खातिर कोई रुकावट होती है ज़ाहिरा या दरपदा नज़र आएगी तो क्रोध बन जाएगा। क्रोधी आदमी की दो सूर्तें होती हैं- एक तो आहिस्ता बोल नहीं सकता,

ज़ोर से बोलता है ना, दूसरे मुंह में झाग आ जाती है। और रुकावट हो, कहता है मैंने ज़रूर लेना है और तत्पर होता है। जब पा ले- लेने के लिये क्या कुछ करना पड़ता है, सौ झूठ, सौ फरेब, सौ दगा, अन्दर और, बाहर और, आगे और पीछे और। जब मिल जाए उसे छोड़ना नहीं चाहता। उस को मोह कहते हैं। और जब मस्त होता है, अहंकार कहते हैं उस को। यह सिलसिला कब से शुरू होता है? हम देह को ही सुखी रखना चाहते हैं। इस के चलाने वाले को नहीं जाना। इन्द्रियों के भोगों को सन्तुष्ट करना चाहते हैं। वह संतुष्ट हो नहीं सकते। बुद्धि भी खास दायरे तक काम करती है। यह सारे हथियार हैं उस आत्मा के, outward expression (बाहर इज़हार है आत्मा का)।

बात समझ रहे हो क्या बात है, बन क्या रही है। यहाँ कौर्मों मजहबों का सवाल नहीं, किसी स्कूल (समाज) में रहो, रोना तो इसी बात का है कि हम इस काया के सुख के लिये क्या करते हैं। बन्दर भी, कहते हैं जब पानी ज़्यादा आए तो अपने बच्चों को पांव के नीचे रख लेते हैं, अपनी जान पर सब को कुर्बान कर देता है। सब कुछ जो हम कर रहे हैं क्यों? इस को (देह को) सुखी रखने की खातिर। शादी हम क्यों करते हैं? आराम मिले। आराम न मिले तो? निकल जाओ, तुम कौन हो? स्त्री शादी क्यों करती है? सुख मिले। न हो तो क्या कुछ हो रहा है दुनिया में। बच्चे किस लिये मांगते हैं? कि हमें वक्त पर काम आएं। अगर न हो तो? रूपया क्यों कमाते हैं? कि तन सुखी रहे, देह सुखी रहे। हम क्या हैं, उस को तो जाना नहीं, देह सुखी रहे। मकान क्यों बनाते हैं, मोटरें क्यों खरीदते हैं? जिस्म को आराम मिले। तो कहते हैं यहाँ से सारा सिलसिला शुरू होता है। महापुरुषों की बाणी में बड़ी brevity है, बड़े थोड़े लफ़ज़ों में वह चीज़ को पेश कर जाते हैं। तो कहा यह (दुनिया) बाजी है। इस बाजी के धोखे में आकर क्या समझते हैं? यह शरीर अमर है। यह अमर नहीं। इस के सुखी करने के लिये सब कुछ कर रहे हैं।

कहते हैं, “लभ लोभ सब कूड़ कमावें बहुत उठावें भार।” तीन किसम के कर्म हैं ना, एक प्रारब्ध है, एक क्रियामान है, एक संचित। इस में अगर यह जान लेता प्रभु को और उस से पहले अपने आप को जान लेता और अपने level से (उस नज़र से) दुनिया को देखता, देखने वाला बन जाता, वह देखता कि वह बाज़ीगर चला रहा है दुनिया को, मेरा क्या है। बाज़ीगर है ना। जब Conscious Coworker of the Divine plan बन जाए (प्रभु इच्छा में अपनी इच्छा को मिलाने वाला बन जाए) तो पीछे कर्म कौन भोगेगा भई? जो संचित रह गये- हज़ारों सालों के संचित कर्म हमारे सिर पर लदे पड़े हैं।

धृतराष्ट्र से यह पूछा गया कि किस जन्म में तुम ने वह कर्म किया था जिस का नतीजा है कि आज तुम जन्म से अंधे हो? कहने लगे सौ जन्म की तो मुझे खबर है, मैंने कोई ऐसा काम नहीं किया। तो भगवान् कृष्ण की कृपा से और पीछे हटे तो देखा, एक सौ कितने जन्म का कर्म था जिसका यह फल था। इस मानुष देह में अगर इस बात को जान लेते कि बाज़ीगर है, इसके चलाने वाला कोई, फिर भोगने वाला कौन है? भोगता वह है जो कर्ता है। जो कर्ता ही न रहे, तो पिछले कर्म कैसे खत्म हो जाते हैं, जैसे भट्टी में दाने भून लो तो फिर उगते नहीं। बात तो यह है। तो इस सब चीज़ की बुनियाद है इच्छा, कामना। महात्मा बुद्ध न क्या कहा? Be Desireless (इच्छाओं से रहित हो जाओ)। और हरेक महापुरुष की basic (मूलभूत) तालीम यही है, तरजे-बयान (वर्णन शैली) अपनी है, बात वही कहते हैं। दशम गुरु साहब ने कहा, कामना-विहीन हो जाओ। कोई कामना न रहे। आप को पता है, बली राम बड़े वज़ीर थे अकबर बादशाह के। यह कायदा था जब बादशाह आए, सारे वज़ीर अदब के साथ खड़े हो जाएं, जब तक बादशाह बैठ न जाए, खड़े रहें। उस दिन उस के (बली राम के) कोट में बिच्छू था। एक डंक मारा, दूसरी जगह मारा, तीसरी जगह मारा- बे-अदबी होती है ना, हिले-तो खड़ा रहा। बादशाह बैठे तो कहने लगा,

देख बादशाह, दुनिया के बादशाह की गुलामी का यह हशर कि बिच्छू डंग मारे, मैं हिलूं नहीं, बाअदब खड़ा रहूं, इस गुलामी से यह अच्छा नहीं कि जिस ने यह सब कुछ बख्शा है, उस की मैं गुलामी कर लूं। Awakened (जागृत) हुआ ख्याल, चोगा फाड़ा, भाग गया। बाहर जा कर खुले मैदान में जा कर लेट गया। बादशाह ने कहा मेरा बड़ा लायक वज़ीर है, वज़ीर भेजे कि उस को बुला लाओ। कहने लगा, नहीं। जब तक मैं उस की (अकबर बादशाह की) गुलामी करता था तब तक ठीक। अब उस बड़े बादशाह की गुलामी करता हूँ। फिर खुद गया (बादशाह)। उस के सामने खड़ा हो गया। कहने लगा, देख वली राम, तू मेरा बड़ा लायक वज़ीर रहा है। मुझे तुझ पर बड़ा नाज़ है, यह है, वह है। कहने लगा, जब तुम्हारी गुलामी थी, थी। अब उस की है। अच्छा भई मांग क्या मांगता हूँ, मेरे सिरहाने से हट जा।

सारी बिना (बुनियाद) कहाँ से शुरू हुई? खाहिश (इच्छा) से। अगर खाहिश ही नहीं तो फिर झगड़े काहे के? हम दुनिया में क्यों फंसते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, एक ही बुनियाद हैं- खाहिश के शुरू होने की। और यह दुनिया में फंस रहे हैं, लड़-मर रहे हैं, नए से नए बीज बीजते चले जा रहे हैं। किनारे खड़े हो जाएं, महात्मा लोग किनारे खड़े होकर देखते हैं, दुनिया कर क्या रही है? “महापुरुष साखी बोल दे साँझी सकल जहाने।” सब को एक जैसा उपदेश देते हैं। आत्मा की नज़र से देखते हैं ना। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं।

एह काया मैं रूलदी देखी ज्यूं धर ऊपर छार॥

जो जिस्म के level से दुनिया को देखते हैं, कहते हैं ऐ काया, तू किस बात का फँखर (घमण्ड) करती है? कहते हैं, इसे मिट्टी में रूलते देखा है। मिट्टी के नीचे दबा देते हैं ना। इस काया की कदर हम से हैं, ‘तिच्चवड़ वसे सहेलड़ी

जिन्चर साथी नाल।” तू काया का रूप बना बैठा है, फ़खर और नाज़ करता है, तेरी क्या कद्र है? उस वक्त तक है (कद्र) जब तक मैं तुम्हारे साथू हूं, आत्मा साथ है? तुझे, कहते हैं, मैंने रूलते देखा है, मिट्ठी में खेह होते देखा है। किस को उपेदश करते हैं? Just see the angle of vision (उन के देखने का नज़रिया, दृष्टिकोण, देखो)। और किस खूबसूरती से पेश कर रहे हैं।

सुन सुन सीख हमारी, सुन सुन सीख हमारी॥

जिस ने ज़िन्दगी के राज़ (भेद) को हल कर लिया है, वह देख रहा है कि इसी से (आत्मा से) यह काया और सब चीजें काम कर रही हैं। कहते हैं ऐ देह! मेरी शिक्षा को सुन। देह तुम को क्यों मिली है? किस लिये मिली थी? प्रभु को पाने के लिये। इन इन्द्रियों से काम लेने के लिये ताकि यह सारी चीज़ें मददगार हों प्रभु के जानने के लिये। कहते हैं, मेरी सीख को सुनो। कौन कह रहा है? जिस ने ज़िन्दगी के राज़ (भेद) को हल किया है। क्या कहता है? आगे सुनिये:-

सुकृत कीता रहसी मेरे जियड़े बहुड़ न आवे वारी॥

(अंतर्गत) कहते हैं, मानुष जन्म बड़े भागों से मिलता है। तुझ को मिल चुका है। “पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे एहला जन्म गंवाया।” फिर यह समय नहीं मिलेगा। “यह तो समय मिला अति सुन्दर, सीतल हो बच धाम से।” तो क्या कर? मानुष जन्म की तुम को जो बारी मिली है, देह मिली है, देह पाई है, इस वक्त एक काम कर लो। कहते हैं सुकृत कर लो। जो सुकृत कर लेगा, वह तो तेरे साथ रहेगा। बाकी सब यहीं के यहीं रह जायेंगे। सुकृत किस को कहते हैं? नेक कर्म को। नेक कर्म किस को कहते हैं? हरेक समाज में अपनी अपनी तारीफ़ है इस की। मगर जो एक में नेक है, दूसरे में बद (बुरा) है। सन्तों की नज़र से सुकृत कर्म कौन हैं? जो कर्म तुम को प्रभु के नज़दीक लाएं, प्रभु को

जानने और अपने आपको जानने के, वह सब सुकृत कर्म हैं, नेक कर्म हैं। जो कर्म तुम को इस से दूर ले जाएं, वह सब बद (पाप) कर्म हैं। कबीर साहब ने कहा, “सुकृत कर ले, नाम सुमिर ले, खबर नहीं कल की।” कहते हैं “खबर नहीं पल की।” सुकृत किस को कहते हैं, फिर मैं अर्ज़ करूँ। पहली बात, सत को धारण करो सत जो चीज़ है वह पेश करो, झूठ को न पेश करो। और चोरी, रियाकारी, झूठ, फरेब, आगे और, पीछे और- यह काम न करो। लोग करते हैं, सच बोलने से बड़ा काम खराब हो जाएगा। यही कहते हैं ना। कइयों की चिढ़ी आती है। उन को कहते हैं भई सच बोलो। दो, चार, दस बार तेरे गाहक नहीं आयेंगे फिर तेरे सारे गाहक बन जायेंगे।

फादर अब्राहम को कहा गया- कहते हैं He never told a lie but he spoke half truth. (कि वह झूठ नहीं बोलते थे मगर आधा सच बोलते थे) half truth (आधे सच) से मुराद (अभिप्राय) है, जितनी ज़रूरत है, उतना कहो। सारा क्यों पेश करते हो? एक मिसाल देता हूँ, दुनिया में यह मुश्किलें हैं। एक गाय आ गई। पीछे कसाई भागा चला जा रहा है। वह कहता है, गाय इधर आई है? कहता है, देख लो। समझे। जो तुम्हारी selfishness (स्वार्थ) को breed (बढ़ाये ना) न करे चीज़ वह ठीक। दूसरे का भला सोचना चाहिये ना। तो कहते हैं, पहली बात तो सच को धारण करो। पांच पाण्डव थे। उनका गुरु मुकर्र हुआ- द्रोणाचार्य। उन के पास गये पढ़ाने को। उस ने पहले दिन कहा कि सत बोलो। सत को धारण करो कि जाओ याद कर के आओ। आगे तो सिलसिला था याद कराने का, अमल में लाने का। आज कल खाली बुद्धि का level रह गया है। बस। दूसरे दिन गये कि भई याद हो गया? चार भाई कहने लगे, जी हां याद हो गया। युधिष्ठिर कहां है? कहते हैं, जी वह कहता है, मैं याद कर रहा हूँ। दूसरा दिन गया, तीसरा दिन गुज़रा, कई दिन गुज़र गए।

युधिष्ठिर आखिर एक दिन आया। कहने लगे (उसके भाई) देखो महाराज! कितनी मोटी बुद्धि है। हम ने उसी दिन याद कर लिया था, इतने दिनों में इसे याद नहीं हुआ। कहा, मैंने सत बोलना याद कर लिया है। और सत्यवादी युधिष्ठिर बने सब को पता ही है। भई इस का नाम है, सत को धारण करना- यह नहीं झूठ-फरेब, आगे और, पीछे और, यह और, वह और।

गुरु को सिर पर राखते चलते आज्ञा माहिं।
कहें कबीर तिस दास को तीन लोक डर नाहिं॥

सत को धारण करो भई। बड़े पाप धोये जायेंगे। जिस काम को कर के झूठ बोलना पड़े, जिस को दरपर्दा (छुप कर) करने का ख्याल है, वह पाप है। बड़ी मोटी बात। आगे है ख्यालात की पवित्रता, Chastity is life sexuality is death. (ब्रह्मचर्य की रक्षा जिन्दगी है, इस का पात करना मौत है)। गृहस्थ आश्रम शास्त्र की मर्यादा के मुताबिक जो बनाते हैं, वह तो ठीक है। जो जीवन ही अर्पण कर दे sexuality (विषय विकार) के लिए- that is wrong (वह पाप है)। मन कर के, वचन कर के, ब्रह्मचर्य को धारण करो।

आगे आता है, सब के अन्तर आत्मा है, प्रभु की अंश है। सब का जीवन आधार वही (प्रभु) है। किसी से नफरत न करो। कोई कुरसी पर खड़ा है, कोई कुरसी पर बैठा है। फर्क कर्मों का है। और जब सब के अन्तर वही है, सब की Selfless (निष्काम) सेवा करो। और क्या करो? अहिंसा परमो धर्मः, यह सारे धर्म हैं, मगर अहिंसा परम् धर्म है। जिस को पाना चाहते हो, वह तो घट-घट में बैठा है, उस का बच्चा जो है उस का गला काट रहे हो, उस को कैसे पा सकते हो? यह हैं सुकृत कर्म। कब करो? कुछ पता नहीं कल क्या हो जाए, पता नहीं पल के बाद क्या हो जाए? फिर करो क्या? “नाम सिमर लो।” इस सारे संसार के चलाने वाले को जान लो।

नाम क्या है? “नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।” वह प्रभु अनाम है, जब इज़हार में (प्रगट रूप में) आया है, God into-expression (करन-कारण प्रभु सत्ता) को नाम कहते हैं ना तो सारा उस बाज़ीगर ने खेल बनाया। क्यों? यह वह जाने। आप को पता है, छुपन-छोत एक खेल होता है, hide and seek. बुढ़िया बन जाती है। एक की आंखें बन्द कर देते हैं, वह बैठ जाती है। बाकी लड़के छुप जाते हैं। जब वह आंख खोलता है तो लड़के भागे-भागे फिरते हैं कि पकड़ न ले। जो लड़का हिम्मत करके बुढ़िया को हाथ लगा ले, वह कहता है, मुझे पकड़ भई, मुझे पकड़। नहीं पकड़ा जाता। तो मानुष तन पा कर उस को (प्रभु को) पा गया उस को काल-माया यह वह क्या कह सकते हैं? वह धोखे से निकल गया। वह फिर गिरता नहीं। उस की आंख बन गई। तो कहते हैं मेरी शिक्षा का धारण करो भई। क्या? सुकृत कर लो। सब से बड़ी बात, “सुकृत कीता रहसी मेरे जियड़े।” यही तुम्हारे साथ रहेगा, बाकी क्या होगा, “बहुड़ न आवे वारी।” यही समय है, This is the time for you. It is thy turn. आगे कहते हैं, इक रहाओ। इस को हृदय में धारण कर लो। इक रहाओ का मतलब यह है। जो काम तुम्हें प्रभु के पाने में और अपने आप को जानने में मददगार हों, वह काम कर। सब से बड़ा काम उस के पाने में जो मददगार है वह क्या है? जिस ने पाया है, उस की सोहबत करो। “बीस बिसवे गुरु का मन माने तो परमेश्वर की गत जाने।” जो बीस बिसवे उस का कहना माने, वही परमेश्वर की गति को जान सकता है। सब से बड़ा काम। वह तुम्हें बुरा क्यों कहेगा। वह कहता है सुकृत कर ले। वह बुरे कामों में तुम्हें क्यों फंसायेगा। वह तो कहता है वह काम करो जिस से तुम्हें प्रभु मिले। इस के आगे इक रहाओ कहा कि यह मुसल्लमा अमर (पक्की बात) है। आगे और कुछ कहेंगे। गौर से सुनो:-

हौं तुध आखाँ मेरी काया तू सुन सीख हमारी॥

जैसे भगवान् कृष्ण ने कहा, तूने सुना? वह कहते हैं, ऐ काया, गौर से सुन मैंने क्या कहा। ऐ काया, मैं तुझ को कह रहा हूँ। सुन भई। मेरी शिक्षा को धारण कर। तू ज़िन्दगी के राज़ (भेद) को, बाज़ीगर को जानना चाहती है तो यह शिक्षा धारण कर मेरी। Press कर रहे हैं (ज़ोर दे रहे हैं)। फिर पढ़ो:-

हैं तुध आखां मेरी काया तू सुन सीख हमारी ॥

निन्दा करे पराई झूठी करे लाएतबारी ॥

कहते हैं निन्दा, लोगों की कोवसाई (बेएतबारी) को धारण कर रहा है। निन्दा किस को कहते हैं? किसी चीज़ को असल कीमत से बढ़ा कर कहना या कम करना, यह निन्दा है। बढ़ा कर कहो तो भी निन्दा है, कम कर के कहो तो भी निन्दा है। Right (सही चीज़) को right (सही) पेश करो। फिर निन्दा, देखिये कैसा हथियार है माफ करना- हमारे हजूर फरमाते थे, बाकी भोगों का तो कोई रस है ना, खाने में, पीने में, इन्द्रियों के भोगों में, मगर निन्दा कौन सा रस है? मीठी है, खट्टी है या चरपरी है, क्या है? सब को यही बीमारी लगी पड़ी है। तुम चुपचाप सुनते रहो- फलाना बुरा है, फलाना अच्छा है, फलाने ने यह काम किया, फलाने ने ऐसा किया, वैसा किया- बस यही करते रहते हैं।

या ज़र (कंचन) के झगड़े या ज़न (कामिनी) के झगड़े। वह इतने पैसे कमा गया, यह हो गया, वह हो गया, जितना वह कमा गया मैं क्यों नहीं। कहते हैं निन्दा दूसरों की दिन-रात, तूने यही काम कर रखा है- ‘झूठी लाएतबारी’- बेएतबारी का काम कर रहा है। नतीजा क्या हुआ? कि आदमी किसी पर भरोसा नहीं रखता, कौवसाई जिस को कहते हैं। कहते हैं तू (ऐ काया) यह काम कर रही है। क्या इस ने काम करना था? उधर चलना था जिधर प्रभु की नज़दीकी हो, वह बातें करनी थीं जिन से प्रभु की नज़दीकी हो। तू निन्दा में लगा रहा, फलाना ऐसा है, फलाना ऐसा है।

एक आदमी नेक है। तुम भी नेकी को धारण करो, यह तो ठीक। वह भजन, फ़र्ज करो, ज्यादा करता है। तुम भी करो। रशक तो ठीक है, हसद (ईर्षा) तो ठीक नहीं है ना। रशक करना तो अच्छा है, हसद करना बुरा है। कहते हैं, इसी में दुनिया लग रही है। कितने good observers हैं (पैनी दृष्टि रखते हैं)। कहते हैं ऐ काया, या तो निन्दा में लग रही है, चिन्ता लगी है, फलाना ऐसा हो गया, वैसा हो गया, आगे यह हो गया, वह हो गया, यह चिन्ता खाए जा रही है। जो आगे होगा, देखा जाएगा, जो हो गया उस का क्या कर सकते हो? कि ऐसी हालत में तू जा रहा है।

वेल पराई जोहें जीयड़े करें चोरी बुरयारी।

पर धन, पर दारा पर तेरी नज़र जा रही है फलानी अच्छी है, फलानी यही और भई अच्छी है, तुम को क्या? दूसरे के ज़र (धन) और ज़न (दारा) के झगड़े हो रहे हैं, सारा दिन। चुपचाप सुनते रहो। या काम की बातें होंगी या क्रोध की, या ज़र (धन) की। प्रभु की बात तो कोई कोई करता होगा। चुपचाप सुनते रहो-या फलाना अच्छा फलाना बुरा, यह है, वह है। या विषय-विकार की बातें होंगी या रूपये-पैसे की, फलाना यह हो गया, वह ज्यादा ले गया, वह गरीब रह गए, यह वह। यह हालत है दिन-रात। नतीजा क्या हुआ? चोरी और बुरियारी- इन्हीं बातों में लगा रहता है। रुपया आए, किसी हालत से हों। झूट-फरेब, आगे और पीछे और। कितना खोल-खोल कर पेश कर रहे हैं एक चीज़ को। हमें नहीं पता हम क्या कर रहे हैं। किनारे वाला देख रहा है हम क्या कर रहे हैं।

हंस चल्लेया तू पिच्छे रहियें, छुट्टर होवें नारी॥

तू जब चला जाएगा, शरीर की क्या हालत होगी? जैसे छुट्टड़ नारी होती है। जिस को पति छोड़ दे उस स्त्री की क्या कद्र है भई? इस देह को कौन पूछता

है? देह की कीमत हम से है। छुट्ट नारी की तरह तुझे फेंक दिया जाएगा। जाओ निकलो। “आध घड़ी कोऊ न राखे घर ते देत निकार।” जीते जी सब, आओ जी, बैठो जी, यह वह। काया को address कर रहे हैं (सम्बोधन कर रहे हैं) तेरी शोभा थी हंस की खातिर, तू समझती है शायद मेरी खातीर है। तुझे कौन पूछता है? तू तो इसी जिस्म को सुखी बनाने में लगी रही।

तू काया रहीये सुपन अन्तर तुध क्या कर्म कमाया ॥

मानुष देह मिली थी बड़े भागों से। सुपने की तरह गुज़र गई। और जो कर्म करना था नहीं किया। क्या किया तूने। “पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गंवाया।” बड़े good philosopher हैं, detail से (ब्यौरेवार) बयान कर रहे हैं माफ़ करना। और commonsense (साधारण समझ) की बात है।

कर चोरी मैं जां दिख लीया तां मन भला भाया ॥

जैसा हम ने किया वैसा पाया। और जो किया इस के लिये, अच्छा लगा तो किया ना! अगर न लगता, right understanding (विवेक बुद्धि) होती तो क्यों करता? जैसा किया वैसा पा रही है। क्यों पा रही है? क्योंकि हमें वह बात अच्छी मालूम हुई थी। नेहकर्म होता, right understanding होती तो क्यों यह काम होता? फिर आगे नये कर्म- जो अच्छे लग रहे हैं वही कर्म कर रहे हैं ना। जिस्म के level (दृष्टि) से अच्छे मालूम होते हैं, आत्मा के level से नहीं।

हलत न शोभा पलत न ढोई ऐहला जन्म गंवाया ॥

न दुनिया हाथ आई न अगली दुनिया हाथ आई। हमें यह जन्म मिला था किस काम के लिये- वह फ़जूल चला गया, बेर्थ चला गया। यहां के लिये कुछ करते कितनी शोभा रहती। अगर पलत की, नाम की खातिर करते, आज दुनिया

में किन का नाम मशहूर है? लोगों की ज़बान पर है? जिन्होंने right (सही-नज़री) को पाया है। कितने ऋषि-मुनि होंगे- दो तीन सौ होंगे शायद। कहते हैं तुम सचमुच दुनिया की शोभा भी लेना चाहते हो तो right understanding को पाओ। आज नानक नानक हो रही है माफ़ करना। उन के माता-पिता का नाम सिवाय सिख भाइयों के किसी को मालूम नहीं। कबीर साहब के माता-पिता का नाम तो मालूम नहीं, कौन थे। ऋषियों के माता-पिता का नाम कौन जानता है? जिन्होंने सही-नज़री को पाया right understanding को, उन के नाम दुनिया की ज़बान पर हैं। अरे इस दुनिया में भी शोभा, मर कर भी शोभा। अरे इस देह के level से देखने में न दुनिया में शोभा, न मर कर शोभा। मानुष जन्म जिस काम के लिये मिला था, वह बेर्थ चला गया। “पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे ऐहला जन्म गंवाया।” इस का मतलब यह नहीं- देह को हमने पालना है।

घट बसे चरणारबिन्द रसना जपे गोपाल ॥

नानक तिस ही कारणे इस देही को पाल ॥

इस में प्रभु को प्रगाट करना था। मानुष देह ही एक ऐसा समय था। इस को खाने को दो, पहनने को दो, गर्भ-सर्दी से बचाओ, यह वह करो। ठीक। जो लेना-देना प्रारब्ध का है, वह खुशी से निभाओ, मगर यह काम अगर नहीं किया तो हमारे खाने-पीने पर पहनने पर, सारे काम करने पर:-

धृग धृग खाया धृग धृग सोया, धृग धृग कापड़ अंग चढ़ाया ॥

धृग परिवार कुदुम्ब सहित स्यों, जित हुए खसम न पाया ॥

पौड़ी छुटकी फिर हाथ न आवे, ऐहला जन्म गंवाया ॥

वही बात कह रहे हैं। समझने की बात है। “सुना? गौर से सुना? तो कितनी श्रांति दूर हुई? हमारा कितना angle of vision (दृष्टिकोण) बदला? सवाल

तो यह है। सुनते चले गये, एक कान से सुना दूसरे से निकलता चला गया, या दूसरों को सुनाने के लिये बातें याद कर लीं, मुँह से निकलने लग गईं। जीवन में धारण करने की ज़रूरत है। वह कुछ और है। तो इसी लिये कहा, wanted reformers not of others but of themselves ऐसे सुधारकों की ज़रूरत है जो दूसरों को उपदेश नहीं अपने आप को उपदेश दें। क्या मिलेगा? God-head (प्रभु)।

हैं खरी दुहेली होई बाबा नानक, मेरी बात न पूछे कोई॥

अब देह पुकारती है, ऐ बाबा! मुझे कौन पूछता है? मेरी कोई बात नहीं पूछता। जिस की खातिर देह की शोभा है, उस को मैंने नहीं जाना, कौन पूछता है? “ऐ काया तू रुदलीं देखी ज्यूं घर ऊपर छार।” “आध धड़ी कोऊ न राखे घर ते देत निकार।” देह कहती है, मेरी क्या गति हो रही है। शोभा जिस से थी, उस को जाना नहीं। फिर? किस काम की। आगे लिखा है इक रहाओ, कि यह मुसलमा अमर (पक्की बात) है, हृदय में धारण कर लो भई, देह की शोभा उस वक्त तक है, जब हम उस को जानें, इस के बनाने वाले को। यह माता के गर्भ में कैसे इस की नाक, कान, आँख बनाई। एक आँख है, दूसरी कोई बना सकता है वैसी भई? सब कुछ किया, मगर वह आँख नहीं बना सके अभी तक। दुहेली कहते हैं, दुखी को। यह दुखी हो रही है। शाम को मर जाए, जल्दी करो। सात आठ बजे मरे तो भी शमशान भूमि पहुँचाओं देह को, जिस पर हम इतना नाज़ करते हैं। जिस के कारण है, उस को जाना नहीं। हम हिन्दु भी बने, मुसलमान भी बने, सिख, ईसाई, बोधी जैन सब कुछ बने, न जाना तो अपने आप को न जाना।

ताजी तुरकी सोयना रूपा कापड़ केरे भारा॥

कहते हैं हम क्या कर रहे हैं? ताजी कहते हैं घोड़ों को। यह घोड़े जो बहुत अच्छे हैं और उन के सामान या मोटरें समझ लो या और आसायश (आराम)

के चलने-फिरने के सामान समझ लो या बाहरी सोना-चांदी, चहल-पहल और कपड़े अच्छे, ज़र्क-बर्क (तड़क भड़क) यह वह, इसी में लगे हुए हैं। जिस्म को संवारने के लिये माफ करना। यह सारी चीज़ें क्यों की जाती हैं? जिस्म को आराम मिले। भई ढांपना है शरीर, कोई हद होनी चाहिये, गरमी-सरदी से बचाओ, तब तो ठीक। मगर अगर दो रूपये, रूपये गज का कपड़ा लेकर तन ढांक लो तो क्या हर्ज़ है, बजाय इस के कि बीस रूपये, पचास रूपये गज का कपड़ा लिया जाए। पचास रूपये भरने के लिये पचास रूपये आने चाहियें कि नहीं। कहां से आयेंगे? यह काम तो स्त्रियों का है भई। मर्द भी कम रौला (शोर) डाले तो आप दया करें। सादा कपड़ा पहनो, सादा रहनी रखो, मर्दों को जुल्म न करना पड़े। सच्ची बात है। मर्द मजबूर हैं, जो गुलाम बन चुके हैं। करना पड़ता है उन को, झूठ-फरेब यह वह। तो कहते हैं, हम आसायशों के लिये तांगे, घोड़े, मोटरें, रूपया-पैसा, महल इकट्ठे कर रहे हैं। किस लिये? जिस्म के लिये, इस को आराम मिले। और जाते हुए साथ नहीं जाती। क्यों साहब? सारे जोड़-जोड़ के यहीं रह जायेंगे।

तिस ही नाल न चल्ले नानक झड़-झड़ पये गंवारा ॥

इन में कोई साथ नहीं जायेगा। अरे भई, शरीर साथ नहीं जाता, इस के कपड़े और सामान कैसे जायेंगे? हम दूसरों का गला काटते हैं, दूसरों का हक मारते हैं। आखिर ईमानदारी से, नेक रस्ते से कितना कमा सकते हो? नहीं कर सकते। जो करते हो ज़रूर किसी का हक मारा हुआ है, दर पर्दा या ज़ाहिरा। हम अपने आप को धोखा दे रहे हैं। कहते हैं यह हालत है दुनिया की। लाखों वाले लाखों, करोड़ों, मोटरों वाले मोटरों, हवाई जहाज़ों वाले हवाई जहाज़ों को यहीं छोड़ जायेंगे। बैंकों में रह जायेगा या घर में रह जाएगा या जमीन में दबा रह जायेगा। जीते-जी भी लोग लड़ेंगे, मर कर और झगड़े पैदा होंगे। इसका यह मतलब नहीं कि रूपया न कमाओ। नेक रस्ते से कमाओ। नेक रास्ते से कमाया हुआ आमदनी में कितना

खर्च करेगा माफ करना। जिस की तनखाह दो सौ या पांच सौ है, और खर्च दो हज़ार का है, वह कहां से आता है? कभी सोचा है? जब मुकद्दमा बन जाता है- पहले तो यह कि मेरा लड़का बड़ा नेक है, वह है, जब मुकद्दमा बन जाए, फिर पाठ रखाते हैं। कितनी तनखाह है? जी सौ रूपया है। और ऊपर से आ जाता है। अरे ऊपर से तो कै आती है। जब मुकद्दमा बन जाए तो, “जी गलती हो ही जाती है।” यह हालत है दुनिया की। जीना ही मुश्किल हो गया है दुनिया में। जो इकट्ठा किया, फिर आखिर यहीं रह जायेगा। बड़ी बात तो यह है ना जाने वाली कौन सी चीज़ है? कौन सी चीज़ साथ जाएगी? जो लोगों के काम आए, बांट कर खाए।

कूजा, मेवा सब कुछ चाख्या इक अमृत नाम तुम्हारा ॥

कहते हैं प्रभु। खाने-पीने में, बहुतेरा कुछ खाया है। यह सब चीज़ें ठीक हैं अपनी जगह।

शक्कर खंड निवात गुड़ माझ्यों माझा दुध ॥

हब्बू वस्थू मिट्ठियां साईं न पुज्जण तुध ॥

शक्कर है, खंड है, शहद है, माझा (भैंस का) दूध है। यह सब चीजें मीठी हैं। कहते हैं, जो मिठास तेरे में है, हे प्रभु, वह इन चीजों में नहीं। तुम्हारा जो नाम है ना, वह आत्मा की खुराक है। परिपूर्ण परमात्मा ज्योति स्वरूप है, हमारी आत्मा उसकी अंश है, यह भी ज्योति स्वरूप है। चेतन आत्मा उस महाचेतन प्रभु से जुड़कर ही हमेशा के सुख को पा सकती है। यह जुड़ी हुई है बाहर सामानों से, तो कैसे सुखी हो सकती है? बस यह दो पहलुओं को समझ लो। हम ने देह को सुखी रखने के लिये ही यह सब कुछ किया, अपने आप को (देह के निवासी को) भूल गये। महापुरुष कहते हैं, घोड़े का सवार वही मजबूत जिसके दोनों पांव

दोनों रकाबों में मजबूत हों, जिसमानी तौर पर भी, आत्मा के लिहाज़ से भी। बिना घर बार छोड़ने से छुटकारा है माफ़ करना। रामकृष्ण परमहंस के पास जाते थे न लोग, वह पूछते, “क्यों भई तेरी शादी हुई है?” कहते, हाँ महाराज। तो कहते, “जो आज़ाद है, उस का भी बुरा हाल है। जो मछली जाल में फँस जाए उस का निकलना बड़ा मुश्किल है।” गृहस्थ में रहना सीखना पड़ता है। पानी बेड़ी में न रहे, बेड़ी पानी में रहे, तब तो ठीक। नहीं तो ढूब मरेगा। और यह जिस्म रूपी बेड़ी मिली थी प्रभु तक जाने के लिये, उस में सुराख लगे पड़े हैं। अरे दोनों के लिये मुश्किल है, त्यागी के लिये भी मुश्किल है और गृहस्थी के लिये भी। जब तक कोई right understanding वाली हस्ती नहीं मिलती, ‘हर दूलानत’ (दोनों ही लाहनत हैं) माफ करना। पाना हकीकत को है। मेरा थोड़ा तजरबा ज़ंगल का भी है, माफ करना, इस लिये कह कह रहा हूँ। बड़े वसूक (दृढ़ता) के साथ कह रहा हूँ कि बाहर भी बुरा हाल है। Contacts (मिलना-जुलना) है सब से, और क्या है। बाहर क्या है। बाहर भी लोगों के मोहताज हैं, दर-दर मांगते फिरते हैं, कई झूठ, कई फरेब, यह वह। यहां घर बार छोड़ें, वहां कइयों की रोटी खानी पड़े। कौन जाता है घर बार छोड़ कर? किसी का कोई मर गया, यह हो गया, वह हो गया, चलो साधु हो गये। ऐसी साधुताई क्या करेगी? Attachment (मोह) का सवाल था, यहां रह कर न करो, बाहर न करो, तब तो ठीक। बाहर भी वैसे ही- वहां झोपड़ियों से, दरख्तों से, हिरनों से attachment हो गई। तो कहते हैं जब तक understanding नहीं मिले काम नहीं बनता। गृहस्थी हो, त्यागी हो- कोई right understanding वाला मिल जाए उस का कुछ demonstration (साक्षात्कार) मिल जाए उस का अनुभव हो कर उस अनुभव को पा ले तो बेड़ा पार हो जाए। गुरु का धारण करना सब के लिये लिखा है। साधु नहीं गुरु धारण करते क्या? “मत कोई भरम भूलो संसार। गुर बिन कोई न उत्तरस पार।” इस भ्रम से निकलों भई, कोई भी गुरु के बिना न तरा है न तर सकता है। गुरु किस

को कहते हैं? जिस को right understanding मिली है। घरबार छोड़ने की ज़रूरत नहीं। त्याग हो तो भी चाहिये (गुरु) घरबार हो, और भी ज्यादा चाहिये-मगर कैसा चाहिये? गृहस्थी को चाहिये जो गृहस्त से गुज़रा हो। नहीं तो त्यागी गुरु उन्हें मिल जाए तो कहते हैं, महाराज आप को क्या पता हमारी क्या गति है। क्यों साहब, यही कहेंगे ना। जो दुनिया में रहा हो हमारी तरह, रह कर उभरा हो, कि हाँ भई, there is hope for everybody (सब के लिये उम्मीद का दरवाजा खुला है)। तो right understanding (विवेक) और right guidance (सही पथ-प्रदर्शन) की जरूरत है, जिन्होंने अनुभव किया है। लैक्चरारों, कथाकारों, ग्रन्थाकारों से नहीं मिलेगी चीज़। जिस ने अनुभव को पाया है, उस की guidance चाहिये, चाहे दुनिया में रहो चाहे बाहर रहो।

दे दे नींव दीवाल उसारी भस्मन्दर की ढेरी ॥

मकान बनाता है- बड़ी गहरी नींव रखो भई, बड़ा ऊँचा, आलीशान बनाया। किस लिये? कब तक? यह सराय है सराय। एक महल था। एक फकीर उस में जा बैठा। बादशाह आया। उस ने कहा, भई कहाँ बैठे हो? फकीर ने कहा, भई सराय में बैठा हूँ। कहा तुम्हारी आँख खुली है? सराय है कि महल। कहने लगा, यह सराय है, सराय में मैं बैठा हूँ। फिर फकीर ने बादशाह से पूछा, तुम से पहले यहां कौन था? कहने लगा, मेरा पिता। उससे पहले? कि मेरा दादा। कि यह सराय नहीं तो और क्या है? कहते हैं एक आदमी महल पर दौड़ा जा रहा था। कहा, किधर जा रहे हो? कहने लगा, मेरा ऊँट गुम हो गया, मैं ढूँढ़ रहा हूँ। कहा, तेरी अकल ठिकाने है। क्या मतलब? कि इतने आलीशान जीवन में कभी हकीकत को पा सकते हैं? कहते हैं सुई के नाके से एक ऊँट का निकलना आसान है, जो इतने आड़म्बर में फंसा हुआ है उस का निकलना मुश्किल है। किसी समरथ पुरुष की कहानी है, निकाले तो निकाले, नहीं तो कैसे निकले? कोई way up करने वाला (पिण्ड से ऊपर लाने वाला) कोई demonstration देने वाला (साक्षात्कार करने

वाला) हो तो। जवानी जमा खर्च से नहीं। और फिर जन्मों के बोझ लदे पड़े हैं (हमारे सिर पर)।

मिसाल के तौर पर एक गधा हो, वह बन्धा हुआ हो, कीचड़ में फंस रहा हो। वह कैसे निकले? किसी को रहम आ जाए, पहले उस के बोझ को थोड़ा हल्का करे। फिर खैंच कर निकाले। हमारे सिर पर जन्मों-जन्मों के (कर्मों के) बोझ लदे पड़े हैं। कोई समरथ पुरुष हमें इन्द्रियों के घाट से परे खींचे, थोड़ा बोझ हल्का करे जन्मों-जन्मों का, फिर इन्द्रियों से खैंच कर ऊपर ला कर थोड़ा demonstration (अनुभव) दे तभी काम होगा ना। तो इस लिये कहते हैं:-

गुर गुण केहा जगत गुरा जे कर्म न नासे ॥

सिंह सरण कत जाईये जो जुम्बक ग्रासे ॥

कि ऐ जगत गुरु तुझे धारण करने का हमें क्या फायदा है जो कर्मों का नाश न हो। शेर की शरण जाने का क्या फायदा अगर वहां भी गीदड़ (कर्मों के) भभकियां मारें। लैक्वर-कथा करना, यह वह- यह तो कोई भाई कर सकता है। बातें भी सुना सकता है। मगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर ला कर कौन अनुभव भी दे सकता है? अनुभव के देने का सवाल है? “गुर प्रसादी आपन आप बुझे?” अपने आप को कब बूझे? जब इन्द्रियों से आज़ाद हों। गुरु कृपा से way up (पिण्ड से ऊपर आए) तब पता लगे मैं देह नहीं, इस देह का चलाने वाला हूँ फिर जीवन आधार (परमात्मा) को जाने।

संचे संच न देही कितही अन्ध जाणे सब मेरी ॥

जोड़-जोड़ के कहता है मेरी, अन्त किस की है? हां जिन पारों से वह चीज़ कमाई है वह पाप तेरे हैं, चीज़ यहीं रह जायेगी। माया की क्या तारीफ है? राम चन्द्र जी महाराज ने फरमाया, जहां मेरे और तेरे का सवाल है यही माया है।

और क्या है। अन्धा इन्सान जानता है मेरी है। आंख वाला नहीं जानता।

सोयना लंका सोयन माड़ी अन्त किसे न केरी॥

बड़ा सोना, बड़ा रुपया, बड़ी बिल्डिंगें, बड़ा यह वह, जायदादें खड़ी हैं। अन्त? सब यहीं रह जायेगा। इस का यह नहीं मतलब मकान न बनाओ। बनाओ। किस लिये? उस का शुक्रिया अदा करो।

जह प्रसाद बसे सुख मन्दिर, तिसे ध्याय सदा मन अन्दर॥

कमाई नेक रस्ते से आए, किसी का खून निचुड़ा हुआ न हो। वह कहते हैं ना ill gotten ill spent (हराम की कमाई हराम में जाती है)। जो इस तरह कमाते हैं, कोई नेक जीवन बनता है उन का? ज्यादा विषय-विकारों में लम्पट होता है। नेक आदमी की कमाई किसी के काम आए तो आए नहीं तो बड़ा मुश्किल है। और सब business चल रहा है। बाहर तो हम कहते हैं दुनिया में जो चल रहा है माफ करना परमार्थ जिसे हम कहते हैं socalled (तथाकथित) उस में बहुत ज्यादा business चल रहा है। “सभी भुलानो पेट के धन्धा,” कबीर साहब कहते हैं। इतने पाठ करो, इतने पैसे ले लो। क्यों साहब? इतना करो इतना ले लो, इतना करो, इतना ले लो। Business नहीं तो और क्या है? किनारे खड़े हो कर देखो ना क्या हो रहा है? प्रचार करना अधिकार था उन पुरुषों का जिन्होंने हक्कीकत को पाया है। अब business चल रही है। और बड़ा अच्छा तरीका है, रुपया कमाने का, very easy way मत्थे टेकेंगे, मलाइयां भी खाओ, सब कुछ करो, रुपया भी इकड़ा कर लो, लोगों को भी गिरदागिरद रख लो, दस बीस paid (तन्धाहदार) आदमी। कहते हैं आसमान से उतरते हम ने देखे हैं। बस। डो-डो-डो करते फिरते हैं। दुनिया की आंख नहीं, सुनी-सुनाई पर नाचती है। यह चीज़ (परमार्थ की दात) कहां मिलती है। सवाल तो यह है।

सुन मूरख मन अंजाना भोग किसे का भाणा ।

ए मन मूर्ख, सोच । होश में आ- जो करेगा वैसा भरेगा । कलम चली कभी मिटेगी नहीं । As you sow so shall you reap. उस के हुक्म की कलम चलती है, “कर्म वहे कलम ।” इस से कैसे हम escape कर सकते हैं? (कर्म से कैसे छूट सकते हैं?) उस बाजीगर को देखने वाले बन जाओ तो । पहले देह को कहा, फिर मन को कह रहे हैं कि देख तू बाहरी सामानों में लम्पट हो रही है । “मन तू जोत स्वरूप है- अपना मूल पछाण ।” कहां तू इन्द्रियों के भोगों-रसों में, जिस्म और दुनिया को कायम रखने ही में लग रहा है, कुछ अपना फिक्र भी कर । फिर कहते हैं, इक रहाओ-जहां जहां मोहर लगाते हैं वहां जोर देते हैं । भई जैसा करोगे वैसा भोगोगे । जब तक Conscious Coworker, देखने वाले, नहीं बनते, कोई छुटकारा नहीं ।

शाह हमारा ठाकुर भारा हम तिस के वणजारे ॥

कहते हैं हमारा एक ही सच्चा शाह है जिस के हम व्यापारी हैं । कौन? परमात्मा । जिसके भेजे हुए हम दुनिया में आए हैं । वह (महापुरुष) भेजे हुए आते हैं, लोगों को चिताने के लिये, होश में लाने के लिये । “जिन तुम भेजे तिन ही बुलाए, सुख सहज सेती घर आओ ।” भई तुम्हें मानुष जन्म मिला है, चलो अपने घर । हमेशा के सुख को पा जाओ । हम वणजारे हैं । दुनिया में आए वणज (व्यापार) करने को । कौन सा वणज करने को? वही (वणज) अच्छा है जिस से प्रभु मिले । क्यों साहब? सच्चा व्यवहार करो जिस से सच की प्राप्ति हो । “सत्संग करो, सत पद खोजो ।” और गुरु से प्यार करो । प्यार क्या? कहना मानो । वह क्या कहता है? नेक कर्म करो । नेक कर्म क्या है? जो तुम को प्रभु से जोड़े । बड़ी साफ़ बात है । अपने आप के मुतल्लक जानो, जीवनाधार (प्रभु) को जानो । वह यही कहते हैं ।

जिओ पिण्ड सब रास तिसे की मारे आपे जिवाले ॥

“रहनी रहे सोही सिख मेरा, सो साहब मैं तिस का चेरा ।” जब तक जीवन नहीं बनता तब तक कैसे हो सकता है? दुनिया सारी रो रही है। रोती आती है, सारी उम्र रोते चले जाते हैं और जाते भी रोती जाती है। “शाह हमारा ठाकुर भारा हम तिस के बणजारे ।” यह अपना-इशारा देते हैं कि हम भेजे हुए आए हैं।

जिओ पिण्ड सब रास तिसै की आपे मारे आपे जिवाए ॥

कहते हैं ज़िन्दगी और मौत हमारी उस के हाथ में है। हवाले हो जाओ उस के, right understanding (सही नज़री) को पाओ, मानुष देह से पूरा फायदा उठाओ। यह शब्द था जो आप के सामने रखा गया। मतलब, समझ आई है तो जीवन में धारण करो। खाली सुन लेना काफ़ी नहीं। जितना करोगे-जितनी खुराक हज़म होगी उतनी ताकत देगी।

*